समावेशी शिक्षा कैसे और क्यो?

भाोधार्थी
अभय कुमार
द"र्न विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. सागर (म.प्र.) 470003
रजि.न. Y154240065
Email–abhayipr@gmail.com
मो.न. – 7723963145

मुख्य बिन्दु – अनिर्वायता, परिलक्षित, आत्महत्या, अवसाद, अरूची

मनुष्य एक चिन्तन"ाील प्राणी है। सोचना मनुष्य का वि"िाष्ट गुण है। इसी गुण के फलस्वरूप वह प"ाुओं से भिन्न समझा जाता है। अरस्तु ने मनुष्य को विवेक"ाील प्राणी कहकर उसके स्वरूप को प्रकाि"ात किया है। विवेक अर्थात् बुद्धि की प्रधानता रहने के फलस्वरूप मानव वि"व की विभिन्न वस्तुओं को देखकर उनके स्वरूप को जानने का प्रयास करता रहा है। मनुष्य की बौद्धिकता उसे अनेक प्र"नों का उत्तर जानने के लिए बाध्य करती रहती है। वे प्र"न इस प्रकार है –

ि"ाक्षा का स्वरूप का है? इसकी उत्पत्ति किस प्रकार और क्यों हुई? ि"ाक्षा का कोई प्रयोजन है अथवा यह प्रयोजनहीन है? ि"ाक्षा क्या है? ि"ाक्षा की जरूरत है या नहीं? ि"ाक्षा का चरम लक्ष्य क्या होना चाहिए? ि"ाक्षा का साधन क्या है? ि"ाक्षा के अच्छे और बुरे पहलू क्या है? व्यक्ति और समाज में ि"ाक्षा का क्या महत्व है? कौन सी ि"ाक्षा किस उम्र में देना या उचित या अनुचित है का मापदण्ड क्या है यह कौन तय करेगा कि समस्या को द"र्न की दृष्टि से खोजने का प्रयास करना। द"र्न इन प्र"नों का युक्ति पूर्वक उत्तर देने का प्रयास है। द"र्न इन प्र"नों का उत्तर देने के लिये बुद्धि का प्रयोग करता है। द"र्न"ाास्त्र का अर्थ ज्ञान–प्रेम या विद्यानुराग होता है। (चैपसवेवचील) (फिलॉस–प्रेम) सोफिया – ज्ञान

अतः द"र्नशास्त्र "सम्पूर्ण वि"व द"र्न का विषय है" Philosophy is the all science of Sciences अथार्त – द"र्न"ाास्त्र सभी विज्ञानों का विज्ञान है।

नवीन ि"ाक्षा नीति के आलोक में इस विषय पर यह दा"र्निक दृष्टीकोण स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है किस प्रकार से ि"ाक्षा को सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय तथा समाज कल्याण एवं आर्थिक स्थिति के स्तर में ि"ाक्षा का प्रयोग हेतु नवीन ि"ाक्षा नीति की अनिर्वायता परिलक्षित होती है। जिसके कारण विद्यार्थीयों के मानि"ाक स्तर पर अवसाद, आत्महत्या, ि"ाक्षा के प्रति अरूची, इसके ठीक विपरीत विद्यार्थियों के बीच ि"ाक्षा के प्रति विद्यानुराग उतपन्न करना इस

नवीन ि"ाक्षा नीति का उद्दे"य है। जिसे बताने का प्रयास इस लेख में दा"र्ानिक दृष्टि से किया गया है।

प्रत्येक बालक में कुछ ऐसे गुण होते हैं जो जन्मजात पाये जाते हैं। यह गुण प्रायः अनुवं"ाकता से सम्बन्धित भी हो सकते हैं, अथवा नहीं भी, इन्हीं गुणों के आधार पर ही बलाकों का शैक्षिक स्तर निर्भर करता है। सामान्य बालकों का शैक्षिक स्तर उनकी बुद्धिलब्धि तथा क्षमताओं के आधार पर ही तय किया जाता है। ठीक इसी प्रकार वह बालक जो कि वि"ोष्ट बालक होते हैं उन्हें भी ि"ाक्षा के पूर्ण अवसर प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होता है। इन बालकों का शैक्षिक स्तर अलग–अलग होता है। अतः प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत हम वि"ोष्ट बालकों को दी जाने वाली समेकित अथवा समावे"ाी ि"ाक्षा के विषय में अध्ययन करेंगे।

समेकित या समावे"ाी ि"ाक्षा का अर्थ अथवा प्रत्यय समावे"ाी ि"ाक्षा वह ि"ाक्षा होती है, जिसके द्वारा वि"ोष्ट क्षमता वाले बालक जैसे मन्दबुद्धि, अन्धे बालक, बहरे बालक तथा प्रतिभा"ाली बालकों को ज्ञान प्रदान किया जाता है।

समावे"ाी ि"ाक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक स्तर की जॉच की जाती हैं, तत्प"चात् उन्हें दी जाने वाली ि"ाक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक ऐसी ि"ाक्षा प्रणाली है, जो कि वि"ोष्ट क्षमता वाले बालकों हेतु ही निर्धारित की जाती है। अतः इसे समेकित अथवा समवे"ाी ि"ाक्षा का नाम दिया गया।

किसी भी ि"ाक्षा प्रणाली का निर्धारण प्रायः बालकों की बुद्धि लब्धि, शैक्षिक योग्यता तथा शैक्षिक स्तर को ध्यान में रखकर किया जाता है। ठीक इसी प्रकार समावे"ाी ि"ाक्षा का निर्धारण भी छात्रों की बुद्धि लब्धि, शैक्षिक स्तर व योग्यताओं को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। इस प्रकार की ि"ाक्षा के कई स्तर होते है। यह स्तर बालकों के स्तरानुसार ही निर्धारित किये जाते हैं। बालकों के स्तरों को निम्नांकित रूप में वर्गीकृत किया गया है –

सामान्य बालक –

1. शारीरिक रूप से भिन्न बालक
2. मानसिक रूप से विचलित बालक
3. सामाजिक रूप से विचलित बालक
4. शैक्षिक रूप से भिन्न बालक

उपरोक्त वर्गीकरण में उल्लेखित बालकों को निम्नलिखित प्रकार से विस्तारपूर्वक वर्गीकृत किया जा सकता है –

1. **भाारीरिक रूप से भिन्न बालक** – वह बालक जो कि अन्य बालकों से शारीरिक रूप से भिन्न होते हैं, यह इस श्रेणी में आते हैं, जैसे –

   अ. सांवेदिक रूप से विकलांग बालक

   ब. गतीय रूप से विकलांग बालक तथा

   स. बहुत विकलांग बालक

2. **मानसिक रूप से विचलित बालक** – वह बालक जो कि मानसिक रूप से विचलित होते हैं, वह इस श्रेणी में आते हैं, जैसे –

   अ. प्रतिभा"ाली बालक

   ब. मन्दबुद्धि बालक तथा

   स. सृजन"ाील बालक

   इस श्रेणी की वि"ोषता यह है कि जरूरी नहीं वल बालक जो कि मानसिक रूप से कमजोर हों वही इस श्रेणी में आयें वरन वह बालक जो आव"यकता से अधिक चतुर व समझदार होते हैं, वह भी इस श्रेणी में आते हैं।

3. **सामाजिक रूप से विचलित बालक** – वह बालक जो कि सामाजिक रूप से विचलित होते हैं वह इस श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं, जैसे –

   अ. सांवेगिक रूप से परे"ाान बालक

   ब. असमायोजित बालक

   स. वंचित बालक

   द. समस्यात्मक बालक

   इ. बाल अपराधी

   ई. माता पिता द्वारा तिरस्कृत बालक

4. **भौक्षिक रूप से भिन्न बालक** – शैक्षिक रूप से भिन्न बालकों के अन्तर्गत निम्न बालक आते है –

   अ. शैक्षिक रूप से समृद्ध बालक

   ब. शैक्षिक रूप से पिछडे बालक

स. किसी विषय वि"ोष को न सीख पाने वाले बालक तथा

द. सम्प्रेषण बाधित बालक

इस प्रकार से इन सभी बालकों को ि"ाक्षा प्रदान करने हेतु ही समेकित अथवा समावे"ाी ि"ाक्षा का प्रावधान तैयार किया गया। अतः समावे"ाी ि"ाक्षा प्रणाली वह प्रणाली है, जो कि वि"िाष्टता ग्रहण किये बालकों हेतु तैयार की गई है।

प्राचीन समाज में बच्चों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रायः सभी दे"ाों के लोग उदासीन थे। बच्चों को अपने सहज विकास के लिए स्वच्छन्दता और अवसर नहीं मिल पाता था। इतना अव"य था कि दैनिक आचरणों, नियम पालन, व्यायाम और नियमित रहन–सहन की कठोरता तथा आत्म–संयम द्वारा उनके शारीरिक विकास पर वि"ोष बल दिया जाता था। सामान्यतया प्रत्येक अभिभावक की यह अभिलाषा होती थी कि उसके बच्चों को ऐसी ि"ाक्षा प्राप्त हो जिससे वह उचित आयु प्राप्त करने पर अभिभावक को परिवार के भरण–पोषण के उत्तरदायित्व से मुक्त कर सके। इस प्रकार बच्चों की ि"ाक्षा के मापदण्ड का निर्धारण व्यक्ति की कुछ आव"यकताओं पर आधारित था। फलतः पूर्व निर्धारण मापदण्ड के अनुरूप उन्हें तैयार करना ि"ाक्षा का एकमात्र लक्ष्य था। बच्चों के विकास की सहज प्रवृत्ति और उनकी स्वच्छन्दता का अध्ययन करना तो दूर रहा– उन पर जान बूझकर कुठाराघात किया जाता था।

समाज के विकास के साथ–साथ ि"ाक्षा के उद्दे"यों एवं स्तर में भी परिवर्तन होता गया। समाज को अपने निरन्तर विकास हेतु सुयोग्य नागरिकों की आव"यकता प्रतीत हुई। फलतः ि"ाक्षा के उद्दे"य के क्षेत्र में कुछ विस्तार हुआ है। अब तक ि"ाक्षा का ध्येय बच्चों को अपने परिवार का उत्तरदायित्व वहन करने योग्य बनाना था और अब उत्तरदायित्व की परिधि विस्तृत होकर परिवार से दे"ा और समाज में परिवर्तित हो गई। फलस्वरूप केवल ि"ाक्षा के उद्दे"य क्षेत्र में विस्तार मात्र हो गया। बालकों की सहज प्रवृत्ति के विकास को फिर भी अवसर नहीं मिल पाया।

भारत में द"र्ान"ाास्त्र को "द"र्ान कहा जाता है" द"र्ान शब्द दृ"ा् धातु से बना है जिसका अर्थ है जिसके द्वारा देखा जाये। "भारत में द"र्ान उस विद्या को कहा जाता है जिसके द्वारा तत्व का साक्षात्कार हो सके भारत का दा"र्ानिक केवल तत्व की बौद्धिक व्याख्या से ही संतुष्ट नहीं होता है बल्कि वह तत्व की अनुभूति प्राप्त करना चाहता है।" भारतीय द"र्ान की दो दृष्टि हैं। 1. ज्ञानमिमांन्सीय दृष्टि – अध्यात्मिक दृष्टि। 2 तत्वमिमांन्सीय दृष्टि – व्यावहारिक दृष्टि।

भारत में द"र्ान ज्ञान के लिए नही, बल्कि सर्वोच्च लक्ष्य के लिये था जिसके लिए मनुष्य इस जीवन में प्रत्यन"ाील रह सकता है।

ि"ाक्षा शास्त्र तथा ि"ाक्षा, ज्ञान, बुद्धि पर विचार प्रकट करते है तो पाते है कि वि"व के श्रेष्ठ ि"ाक्षा–"ाास्त्री–राष्ट्रपिता महात्मागॉधी, सुकरात, स्वामी विवेकानंद, अरस्तु, ने जीवन पद्धति के दा"ार्निक है। जबकि–जानलॉक, दुर्खीम, रूसो, कार्लमार्क्स, हीगेल, जे.एस. मिल इत्यादि ज्ञान व विज्ञान की दृष्टि से प्रमाणित ि"ाक्षा पर बल देते है।

ि"ाक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला–कौ"ाल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाते है। बच्चे के जन्म से कुल दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते है। जब बच्चा कुछ बडा होता है तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथाा सामाजिक आचरण की विधियॉ सिखाई जाने लगती है। जब वह तीन–चार वर्ष का होता है तो उसे पढना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारंभ किया जाता है। विस्तृत रूप में देखे तो किसी समाज में ि"ाक्षा की यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अतः अपने वास्तिविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सप्रजनन प्रक्रिया ही ि"ाक्षा है। ि"ाक्षा का शाब्दिक अर्थ यह भी है कि ि"ाक्षा शब्द संस्कृत भाषा की ि"ाक्ष् धातु में अप्रत्यय लगने से बना है। ि"ाक्ष् का अर्थ है सीखना और सिखाना इस लिये ि"ाक्षा का अर्थ हुआ सीखने–सिखाने की प्रक्रिया। यदि हम ि"ाक्षा के लिये प्रयुक्त शब्द ऐजूके"ान पर विचार करे तो भी उसका यही अर्थ निकलता है। ऐजूके"ान शब्द लेटिन भाषा के एजूकेटम शब्द से बना है और ऐजूकेटम शब्द उसी भाषा के ए तथा ड्यू को दो शब्दों से मिलाकर बना है। ए का अर्थ है अंदर से और ड्युकों का अर्थ आगे बढाना इस लिये ऐजूके"ान का अर्थ हुआ बच्चे की आंतरिक शक्ति को बाहर की ओर प्रकट करना।

मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही ि"ाक्षा है। स्वामी विवेकानंद

ि"ाक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोकृष्ट विकास से है। महात्मा गांधी

मूल्य ि"ाक्षा के सन्दर्भ में हमारे सामने तीन प्र"न उभर कर आते है। पहला यह कि मूल्य तो व्यक्ति अपने समाज की विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने से स्वयं ग्रहण करता है, इन्हें औपचारिक रूप से सिखाने अथवा विकसित करने की क्या आव"यकता है। दूसरा प्र"न यह है कि यदि हमें बच्चों को मूल्यों की ि"ाक्षा देनी है तो वह किन मूल्यों की। और तीसरा और अंतिम प्र"न यह है कि यदि हमें अपने बच्चों को कुछ मूल्यों की ि"ाक्षा देनी है तो वह कब और किस प्रकार दी जाए। यहॉ हम इन तीनों प्र"नों पर अलग–अलग विचार किया गया है।

ि"ाक्षा के प्रचार और प्रसार हेतु भिन्न प्रकार की योजनाओं का गठन किया गया है। हमारे दे"ा सहित अन्य दे"ाों में भी ि"ाक्षा आयोग और ि"ाक्षा समितियों का गठन किया गया है। सभी ने किसी न किसी रूप में मूल्य ि"ाक्षा की आव"यकता पर बल दिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे दे"ा में ि"ाक्षा को समग्र रूप से देखने और उसके सुधार हेतु सुझाव देने के लिये कोठारी आयोग 1964–66 का गठन किया गया । इस आयोग ने प्रतिवेदन में मूल्य ि"ाक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने की बता कही गई है। राष्ट्रीय ि"ाक्षा निति 1986 में भी इस बता पर खूब विचार विमा"र्ा किया गया है। फरवरी 1999 में भारतीय संसद में जो.एस.बी. चह्वाण समिति की रिपोर्ट प्रस्तुत हुई थी। उसमें सत्य, सदाचरण, शांति, प्रेम और अहिंसा को सर्वभौमिक मूल्य माना गया है। तब ही आप ही विचार करे की सर्वभौमिक मूल्यों के नाम पर भारत में किन मूल्य की ि"ाक्षा दी जाये? भारत सरकार ने भी ि"ाक्षा के प्रचार और प्रसार में महत्वपूर्ण योग्यदान दिया है।

संविधान के अनुच्छेद 29 (2) में यह व्यवस्था की गई है– राज्य द्वारा पोषित अथवा राज्य निधि से सहायता पाने किसी भी ि"ाक्षा संस्था में किसी भी नागरिक को धर्म, मूल, वं"ा अथवा जाति के आधार पर प्रवे"ा से वंचित नहीं किया जाएगा। वर्तमान में यह नियम वित्तविहीन मान्यता प्राप्त ि"ाक्षा संस्थाओं पर लागू है, पब्लिक स्कलों पर भी।

जगतगुरू शंकरार्चाय, डॉ. एनी बसेन्ट, गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर, महाकवि श्री अरविन्द, जाकिर हुसैन, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् इत्यादि अध्यात्मिक ज्ञान को ही उचित मानते है।

अतः सुकरात की उक्ति वर्तमान में प्रासंगिक हो उठती है कि हमारी ि"ाक्षा या ज्ञान का अर्थ– भौतिक वस्तु की प"चात, उनके बारे में दिया गया ज्ञान या ि"ाक्षा नही होनी चाहिए बल्कि विद्यार्थी या उनके मानव, व्यक्ति के ह्रदय स्थल में रखी हुए ज्ञान को प्रस्फुटित करना ही ि"ाक्षा या ज्ञान का मुख्य उद्दे"य होना चाहिए अर्थात् आत्म –ज्ञान होना चाहिए।

"ि"ाक्षा एक प्रक्रीया है जिसमें अधिक विकसित व्यक्तिव कम विकसित व्यक्त्वि के सम्पर्क मे आता है और कम विकसित व्यक्त्ति की आगामी ि"ाक्षा हेतु विकसित व्यकित्त व्यक्त करता है।" एच.सी. मारीसन।

अन्त में – ि"ाक्षा का मुख्य उद्दे"य जीवन द"र्ान का ज्ञान – ि"ाक्षा की सफलता में केवल व्यवहार में परिवर्तन लाने से है। अपितु बालक मे मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने से है। ि"ाक्षक का इन मानवीय मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होना चाहिए। उसे सत्यम ि"ावम सुन्दरम का मार्ग स्वयं अपनाकर विद्यार्थियों को पूजी मार्ग की और प्र"ास्त करना चाहिए।

ि"ाक्षा की पद्धति और महत्व कुछ इस प्रकार है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, व्यावहारिक, सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिक स्तर पर किस प्रकार का ज्ञान किस उम्र के बच्चों को कब कौन

सा पाठ्यक्रम उनके अध्ययन के लिए लागू किया जाय इस प्र"न की समस्या का हल प्राचीन इतिहास में मिलता है कि पाषाण काल, नवपाषाण काल मे ि"ाक्षा का विकास नहीं हो पाया था, लेकिन आर्य समाज ि"ाक्षित या संस्कृति से परिपूर्ण व अनु"ाा"ान प्रिय या सभ्य समाज की स्थापना ि"ाक्षा के महत्व तथा पाठ्यक्रम में डिप्लोमा सर्टिफिकेट के महत्व को पाया जाता है जिस कारण वे वैज्ञानिक की परीक्षा में नियोग्य माने गये अतः आप की ि"ाक्षा व्यवस्था में मूल्य परक ि"ाक्षा का महत्व है यह कथन राष्ट्रपति – डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहॉ था। वर्तमान ि"ाक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसमें ज्ञान की वास्तविकता और पारदा"िर्ता बनी रहे तथा अध्यापाक के प्रति सम्मान बच्चों में ऐसी भावना पैदा कि जा सके। ि"ाक्षा के पाठ्यक्रम में पारिवर्तन हेतु, जयप्रका"ा नारायण, महात्मा गॉधी, दयानन्द सरस्वती, इत्यादि थे।

यूनानी ि"ाक्षक वेस्टोलोजी का यह कथन कि–यदि कोई बच्चा 7 साल की उम्र तक मेरी निगरानी में रखा जाय तो, शैतान या खुदा ही उसकी मानसिक स्थिति में परिर्वतन नही ला सकता।

अर्थात बच्चों में मजबूत ि"ाक्षा का पाठ्यक्रम उनके कोरे कागज पर धीरे धीरे एक मजबूत पकड बना देता है। जो कि आगे चलकर महान गुणों में बदल जाता है। उदाहरण के लिए ि"ावाजी जो कि पहाडी चूहा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

वर्तमान में ि"ाक्षा पाठ्यक्रम को मूल्य परख तथा संचार व औद्योगिक उद्योग, के सम्बन्धित विषयों और पाठ्यक्रम को शामिल करना चाहिए जिससे कि विद्यार्थियों का ि"ाक्षा से लाभ हो सके।

राष्ट्रपिता महात्मागॉधी जी का मानता है कि भारत की उच्च ि"ाक्षा कपास विनती है, यहॉ कि महात्मागॉधी जी ने पहली कहॉ है कि ि"ाक्षा धनोपयोगी अर्थात समाज में जीवनयापन योग्य की होनी चाहिए–लघु एवं कुटीर उद्योग, 10वीं. एवं 12वीं. पालीटेकनिक की ि"ाक्षा, आदि।

11वीं और 12वीं के बच्चों में सोचने और समझने की समता का विकास 19 साल के उपरान्त ही होने लगता हे अतः उन बच्चों को भी द"ार्न"ाास्त्र, यौन ि"ाक्षा, का ज्ञान दिया जाना चाहिए, महापुरूष पं. मदनमोहन मालवीय जी ने कहॉ था कि – जहॉ विज्ञान समाप्त होता है वही से अध्यात्म की या धर्म की शुरूआत होती है।

अतः विज्ञान और द"ार्न"ाास्त्र, ि"ाक्षा और द"ार्न शास्त्र का बढा ही गहरा संबंध है।

जिस प्रकार विज्ञान ने नियमों पर चलता है उसी प्रकार द"ार्न"ाास्त्र भी अपनी दो दृष्टियों पर चलता है तथा ि"ाक्षा"ाास्त्र भी नैतिकता और अनुसासन की महान उच्च कोटी की भावना को समाहित करते हुए बच्चों में मूल्य परक ि"ाक्षा और अध्यात्मिक पारदा"िर्ता लाने में जहा तक सिद्ध होती है। यही कारण है कि भारत में अनेक महापुरूष, व्यावहारिक राजनैतिको तथा

समाजसुधार, वर्ग संघर्ष का कालमार्क्स और संतो ने समान–समान पर जन्म लेकर भारत भूमि को देवताओं की भूमि बनाने मे तथा ज्ञान की नगरी कहलाने में सराहनीय योगदान दिया है।

अतः सुकरात और कबीर जी के विचारों में ि"ाक्षा का अर्थ–जो सभ्यता, ज्ञान, संस्कृति, देवता होने का परिचय दे नही ंतो वे प"ाु या राक्षस और दानव कहलायेगा–कबीर दास ने कहा था।

"मासि कागद छुयो नही, कलम गहो नहीं हाथ।" अतः मौलिक ि"ाक्षा का प्रमाण किसी भी प्रकार की लिखित व्यवस्थित और औपन्यासिक ि"ाक्षा से कम नहीं ठहरता वर्तमान में कही कही प्रमुा और औपचारिक ि"ाक्षा से कम नहीं ठहरता वर्तमान में भी कही कही पुरूष और स्त्री लिख नहीं सकते लेकिन पढ और समझ सकते है। ये वर्तमान ि"ाक्षा पाठ्यक्रम का रहस्य है। फिर भी थोडी बहुत रूचिकर बनाने का प्रयास तथा आर्थिक सहायता हेतु पाठ्यक्रम की कमी रह जाती है। जिससे विद्यार्थियों का कल्याण निहित है।

भाोध पद्धति –

द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है।

सुझाव –

1. समेकित ि"ाक्षा हेतु परिश्रमि अध्यापकों की व्यवस्था – वि"ाष्ट बालकों को उचित ि"ाक्षा प्रदान करने के लिये वि"ाष्ट परिश्रमि अध्यापकों की व्यवस्था करनी चाहिए।
2. समाज सेवियों तथा वि"ोषज्ञों की व्यवस्था – वि"ाष्ट बालकों को प्र"िाक्षित करने के लिए समाज सेवियों तथा वि"ोषज्ञों की व्यवस्था करनी चाहिए।
3. अतिरिक्त कक्षा की योजना – सामान्य विद्यालयों या कक्षाओं में पढ़ रहे वि"ाष्ट बालकों को अलग करके अतिरिक्त कक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए।
4. समेकित कक्षा योजना – जिस विद्यालय में शैक्षिक रूप से पिछडे बालक, प्रतिभा"ाली बालक, शारीरिक रूप से विकलांग बालक, सामाजिक रूप से वि"ाष्ट बालक आदि की संख्या अधिक हो, इस स्थिति में इन बालकों के साथ बैठाकर ि"ाक्षा देने उचित नहीं है।
5. समेकित विद्यालय योजना – यदि वि"ाष्ट बालक सामान्य विद्यालय के बालकों के साथ समायोजन करने में पूरी तरह असमर्थ होते हैं तो इस परिस्थिति में इन बालकों के लिए जैसे – चक्षुहीन, बहरे व गूॅगे, बाल–अपराधी, कुसमायोजित, उच्च प्रतिभा सम्पन्न, सृजनात्मक, समस्यात्मक आदि के लिए समेकित विद्यालय की व्यवस्था करनी चाहिए।
6. आवासीय विद्यालय योजना – अन्धे, बहरे विकृत शरीर वाले, बाल अपराधी, मानसिक रूप से विकलांग व मन्द बुद्धि तथा सांवेगिक रूप से असंतुलित आदि गम्भीर वि"ाष्ट बालकों के लिए आवासीय विद्यालय की योजना क्रियान्वित करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. भट्ट श्री कृष्ण, (1996), बाबा विनोवा, सर्वसेवा संघ प्रका"ान, छटा संस्करण, पृष्ठ सं. 40।
2. लाल बिहारी रमन, (2007), ि"ाक्षा के दा"ार्निक एवं समाज"ाास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिके"ान्स, पृ. सं. 522–550।
3. एस.के.नारंग, समावे"ाीय ि"ाक्षा, अग्रवाल पब्लिके"ान, संस्करण 2015, पृ.स. 1–3